कमर पर टिका है और बाया पैर ताल देने की मुद्रा मे है। इसके अलावा दो नग्न मूर्ति के धड़ मिले है।

बर्तन भांडे ⇒ मोहनजोदड़ो व हड़प्पा से प्राप्त मिट्टी के बने बर्तन भांडो में नुकिली किनारी के गिलास कटोरिया, 2 कावियां बोतल, श्मशान पात्र छिद्र वाले बर्तन व 5 संग्रहणपात्र तथा छोटे बर्तन अच्छी चिकनी के भी है। यह चाक पर बनाए गए है। कांच का ओप (चमक) बढ़ाने की लिए प्रक्रिया का प्रचलन सबसे पहले सिंधु घाटी से ही मिलता है। बर्तनो पर असंख्य अलंकरण है। जिनमें टेढ़ी मेढ़ी रेखाएं, लहरदार रेखाएं, मोर, मछली, जलचर सींगदार, पशु, फूलपत्ती आदि मिलते है। एक शिकारी मृग का शिकार कर रहा है। आलेखन की पृष्ठ भूमि काली है। व चित्रकारी लाल रंग से की गई।

मुद्राये व मोहर ⇒ मोहनजोदड़ो में केवल तीन मिट्टी की मोहरे मिलती है। जिनमे मोहन जोदड़ो से प्राप्त एक मोहर पर शिव-पशुपति के रूप में पशुओं के साथ बनाया गया है। इस मुहर में सींगदार मुकुट पहने त्रिनेत्रधारी शिव एक योगी के समान सिंहासन पर बैठे है। उनके चारों ओर पशु है। जिनमे हाथी और चीता दाहिनी ओर गैंडा और भैंसा बायीं ओर एक ओर एक सींग हिरण सिंघासन के बीच खड़ा है। कुछ मोहरो पर वृषभ व हिरण का संयुक्त रूप भी देखने को मिलता है। मोहन जोदड़ो से प्राप्त टिकरे में नाव का रेखाचित्र उत्कीर्ण है। जिसका समय अनुमानत 3000 ई० पू० है। ये मोहरे वर्गाकार व गोल व बेलनाकार आकारों में मिलती है। कहीं-2 मिट्टी के टिकरो या मोहरो पर रेखाये उत्कीर्ण करके भी चित्र बनाये गये है।

Scanned with CamScanner

PAGE ....
DATE ..../..../....

ताम्र मुद्रायें ⇒ सिन्धु घाटी में कुछ ताम्र मुद्रायें भी मिली है। जिन पर पशुओं की आकृति उत्कीर्ण है। इन ताम्र मुद्राओं को 'ताबीज' की संज्ञा दी है। इन मोहरों पर उकेरी चित्र लिपि अभी तक किसी के द्वारा पढ़ी नहीं गई है।

खिलौने ⇒ मोहनजोदड़ो में पक्की मिट्टी के रोचक खिलौने प्राप्त हुए हैं। जिनमें सीटियाँ, झुनझुना, पहियों से युक्त चिड़िया तथा रथ, पुरुष और स्त्री आकृतियाँ आदि शामिल है।

लिपि ⇒ सिन्धु सभ्यता में चित्रमय लिपि का विकास मिलता है। जिनमें 396 चिन्हों का प्रयोग हुआ है।

वास्तु व नगर विन्यास कला ⇒ वास्तु नगर विन्यास कला के श्रेष्ठ नमुने कहे जाते है। उत्खनन से सार्वजनिक भवन राज प्रसाद, धान्यागार, स्नानागार तालाब, समाधियाँ दोनो नगरों में उपलब्ध है। सीढ़ीदार जलाशय परिवहन मार्ग व गलियाँ समकोण पर एक दूसरे से मिलती थी। हड़प्पा का राजमार्ग 33 फीट चौड़ा था। व ईंटों के फर्श बनाये गये थे बचाव के लिए मकानों के मुख्य दरवाजे मुख्य मार्ग पर न होकर गलियों की ओर बनाये जाते थे। गन्दे पानी के निकास के लिए आधुनिक सीवर के समान ही जमीन के अन्दर नाली तथा चौबन्दे बनाये जाते है।

धरातल रंग व कूची ⇒ समस्त चित्रों में खनिज रंगों का प्रयोग जिनमें गेरू, रामरज, काजल व खड़िया है। रंग भरने में [illegible] विशेष तकनीक का प्रयोग

1/1

Scanned with CamScanner